

पाक अधिकृत कश्मीर में भड़की आजादी की आग: पाकिस्तान की दोहरी नीति बेनकाब

रावलकोट (ईएमएस)। पाकिस्तान के जबरन कब्जे वाले पाक अधिकृत कश्मीर (पीओके) में आजादी की मांग को लेकर जबरदस्त अशांति फैली हुई है। पाकिस्तानी प्रशासन शांतिपूर्ण आंदोलन को क्रूरता से दबाने की कोशिश कर रहा है, लेकिन उसकी मुश्किलें कम होती नहीं दिख रहीं। पाकिस्तान की कश्मीर नीति का दोहरापन पूरी दुनिया के सामने बेनकाब हो गया है, जहां वह जम्मू-कश्मीर के दोनों हिस्सों के लिए अलग-अलग मापदंड अपनाता है। वहां के लोग चुनावी गड़बड़ियों और सेना व उसकी खुफिया एजेंसी आईएसआई द्वारा लोकतंत्र को कमजोर करने का विरोध कर रहे हैं।

हाल ही में मीरपुर डिवीजन में हुए विधानसभा चुनावों में जॉइंट अवामी एक्शन कमेटी (जेएएससी) के बहिष्कार के आह्वान के कारण मतदान बेहद कम रहा। बावजूद इसके, संघीय स्तर पर सत्ताधारी पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) और पाकिस्तान पीपल्स पार्टी (पीपीपी) ने सीटें जीतीं, जिस सत्ता-सझाकरण का एक पूर्व-निर्धारित नाटक बताया जा रहा है। हालांकि, इस बीच पाकिस्तानी सुरक्षा बलों की बर्बरता जारी है। निहत्ये प्रदर्शनकारियों पर गोलीबारी में महज तीन दिनों में 33 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 5 जून को आंदोलन शुरू होने के बाद से अब तक 60 से 70 प्रदर्शनकारी अपनी जान गंवा चुके हैं।



विरोध प्रदर्शनों का नेतृत्व कर रही जॉइंट अवामी एक्शन कमेटी (जेएएससी) अपनी 38-सूत्रीय मांगों के साथ मुजफ्फराबाद की ओर मार्च कर रही है। प्रदर्शनकारी हम क्या चाहते- आजादी, हम लेकर रहेंगे आजादी जैसे नारे लगा रहे हैं, जिससे साफ है कि उन्हें राष्ट्रवादी गुटों का भी समर्थन प्राप्त है, जिनमें जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट के बचे-खुचे सदस्य भी शामिल हैं। पाकिस्तान सरकार ने इंटरनेट बंद करने, मुख्यधारा की मीडिया कवरेज रोकने और जेएएससी को भारत का पिड्डू बताकर इन

विरोध प्रदर्शनों को बदनाम करने की कोशिश की, लेकिन ये सभी कदम बेअसर साबित हुए हैं। रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने खुलकर भारत पर आरोप लगाए, लेकिन यह रणनीति भी काम नहीं आ रही। हैरानी की बात यह है कि पाकिस्तानी सेना अपने प्रॉक्सि गुटों जैसे ऑल पार्टीज हुरियत कॉन्फ्रेंस (पीओके चैप्टर) और यूनाइटेड जिहाद कार्रजिसल का भी इस्तेमाल आंदोलन को दबाने के लिए नहीं कर पा रही है। भारतीय अत्याचारों का उनका दशकों पुराना नैरेटिव अब बेअसर हो गया है, जिससे

उन्हें भविष्य में भर्ती की समस्या का डर सता रहा है। इन विरोध प्रदर्शनों ने जम्मू-कश्मीर के लोगों के आत्मनिर्णय के अधिकार का समर्थन करने वाले पाकिस्तान के सैद्धांतिक रुख की पोल खोल दी है। जो आजादी-समर्थक नारे कभी श्रीनगर में पाकिस्तान को बहुत पसंद आते थे, वे अब पीओके में सुनकर पेशान कर रहे हैं। भारत पर चुनावी धांधली का आरोप लगाने वाला पाकिस्तान अब अपने ही घर में हुए चुनावों में हेरफेर को कैसे सही ठहराएगा, यह उसके लिए एक बड़ी चुनौती है।

आंग सान सू की की पहली सार्वजनिक तस्वीर आई सामने

नेपीडॉ(ए)। म्यांमार की पूर्व नेता और नोबेल शांति पुरस्कार विजेता आंग सान सू की एक बार फिर चर्चा में हैं। सैन्य समर्थित सरकार ने दावा किया है कि 81 वर्षीय सू की ने इंटर्नेशनल कमेटी ऑफ द रेड क्रॉस (आईसीआरसी) के एक अधिकारी से मुलाकात की है। सरकार की ओर से इस मुलाकात की तस्वीर भी जारी की गई है। पिछले कुछ वर्षों में किसी विदेशी प्रतिनिधि के साथ सू की की यह पहली सार्वजनिक मुलाकात मानी जा रही है। जारी तस्वीर में आंग सान सू की पारंपरिक बर्मी पोशाक पहने मुस्कुराती हुई नजर आ रही हैं। वह आईसीआरसी के म्यांमार प्रतिनिधि से हाथ मिलाती दिखाई

दे रही हैं। यह मुलाकात एक साधारण कमरे में हुई, जहां लकड़ी का फर्श और दीवारें दिखाई दे रही हैं। इस तस्वीर को सू की की सेहत और उनके जीवित होने को लेकर उठ रहे सवालों के जवाब के रूप में देखा जा रहा है। हाल के दिनों में सू की के स्वास्थ्य को लेकर कई तरह की चिंताएं जताई जा रही थीं। उनके बेटे किम एरिस ने सैन्य सरकार से मांग की थी कि वह यह साबित करे कि उनकी मां जीवित हैं और किस स्थिति में हैं। उन्होंने कहा था कि उन्हें लंबे समय से यह जानकारी नहीं दी गई है कि उनकी मां कहाँ हैं और उनकी हालत कैसी है। इससे पहले सैन्य सरकार ने 19 जून को सू की के 81वें

जन्मदिन की कुछ तस्वीरें जारी की थीं, जिनमें वह सफेद कपड़ों में केक काटती नजर आई थीं। अब रेड क्रॉस अधिकारी के साथ उनकी तस्वीर सामने आने के बाद उनकी मौजूदगी को लेकर लगाए जा रहे कयासों पर विराग लगाने की कोशिश की गई है। सू की की यह मुलाकात ऐसे समय में हुई है, जब म्यांमार के सैन्य प्रभुय और राष्ट्रपति मिन आंग ङ्ढांग 6 अगस्त को थाईलैंड की यात्रा पर जाने वाले हैं। वहां उनकी मुलाकात थाई प्रधानमंत्री अनुतिन चार्नवीराकुल से होगी। थाईलैंड पहले भी म्यांमार की स्थिति पर बातचीत के लिए सू की से संपर्क की इच्छा जता चुका है। आंग सान सू की 2021 में हुए सैन्य

तख्तापलट के बाद से हिरासत में हैं। उनके खिलाफ कोविड नियमों के उल्लंघन, भ्रष्टाचार और सेना के खिलाफ उकसावे सहित कई मामलों में कुल 27 साल की सजा सुनाई गई है। उनके समर्थकों और मानवाधिकार संगठनों का कहना है कि यह कार्रवाई राजनीतिक उद्देश्य से की गई है। हालांकि म्यांमार सरकार लगातार दावा करती रही है कि सू की स्वस्थ हैं और उनके साथ उचित व्यवहार किया जा रहा है। जुलाई में विदेश मंत्री ने भी उनकी अच्छी सेहत का दावा किया था, लेकिन उनके बेटे ने इन दावों पर भरोसा जताने के बजाय ठोस प्रमाण की मांग की थी।

गंभीर की कोचिंग टीम में लगातर हुआ है बदलाव

मुम्बई (ईएमएम)। भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर के कार्यकाल संभालने के बाद से ही उसके सहयोगी स्टाफ में शामिल किये पुराने सदस्यों को हटाया जा चुका है। केवल मोर्ने मोर्केल ही इस दौरान गेंदबाजी कोच के तौर पर टीम में बचे हुए हैं। जुलाई 2024 में गौतम गंभीर ने जब मुख्य कोच की जिम्मेदारी संभाली थी, तब उनके साथ अभिषेक नायर और रयान टेन डोशेट जैसे सहायक कोच थे पर वे अब बाहर हो गये हैं। वहीं गेंदबाजी कोच के रूप में दक्षिण अफ्रीका के दिग्गज मोर्ने मोर्केल को नियुक्त किया गया था जबकि फील्डिंग कोच के पद पर टी दिलीप का कार्यकाल आगे बढ़ाया गया था पर अब गंभीर की शुरुआती टीम के तीन महत्वपूर्ण सदस्य अब उनके साथ नहीं हैं। दोनों सहायक कोच और फील्डिंग कोच को अलग-अलग कारणों से हटा दिया गया है। अभिषेक नायर को बीसीसीआई ने उनके पद से बर्खास्त कर दिया था, जबकि रयान टेन डोशेट निजी कारणों का हवाला देते हुए टीम से अलग हो गये। वहीं, फील्डिंग कोच टी दिलीप के कार्यकाल को आगे नहीं बढ़ाया गया, जिससे इस महत्वपूर्ण विभाग में भी एक नया चेहरा तलाशना पड़ा। ये बदलाव टीम के अंदर एक नए संगठनात्मक ढांचे की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।

अब गंभीर की नई टीम की बात करें तो, मुख्य कोच के तौर पर उनके अलावा सिर्फ मोर्ने मोर्केल ही उनकी पुरानी टीम से गेंदबाजी कोच के रूप में बरकरार हैं। बीसीसीआई ने एक रणनीतिक कदम उठाते हुए सहायक कोच के पदों को समाप्त कर दिया है। इन दो सहायक कोच की जगह अब बीसीसीआई ने बल्लेबाजी



और स्पिन गेंदबाजी के लिए विशिष्ट कोच नियुक्त किए हैं। बल्लेबाजी कोच के रूप में काफी समय पहले सितांशु कोटक टीम से जुड़ चुके हैं, जबकि स्पिन गेंदबाजी कोच जिम्मेदारी साईराज बहुतुले को मिली है। इसके अलावा, फील्डिंग कोच के तौर पर सुभाषिंद घोष रखे गये हैं। इस तरह, गंभीर के नेतृत्व में भारतीय टीम के कोचिंग स्टाफ में एक बड़ा बदलाव देखा गया है, जो अधिक विशिष्ट और केंद्रित भूमिकाओं पर जोर देता है। कुल मिलाकर, तीन महत्वपूर्ण चेहरों की विर्दाई और नए विशेषज्ञों की नियुक्ति से टीम इंडिया का सपोर्ट स्टाफ अब एक नए आकार में सामने आया है।

मुम्बई (ईएमएस)। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में कुछ क्रिकेटर ऐसे हैं जिन्होंने अपने करियर में दो देशों की ओर से खेले हैं। इसके कई कारण भी रहे हैं जैसे अवसरों की तलाश, नागरिकता में बदलाव या जन्मभूमि में वापस लौटना। ये क्रिकेटर खासे सफल भी रहे हैं। इन्में दक्षिण अफ्रीका के पूर्व कप्तान भी शामिल हैं। वेसल्स सहित ये क्रिकेटर अपने प्रदर्शन से भी छाये रहे हैं। केप्टन वेसल्स : केप्टन वेसल्स की बात करें तो उन्होंने ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका दोनो ही ओर से खेला है। रंगभेद की नीति के कारण जब दक्षिण अफ्रीका पर अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंध लगा था। तब वेसल्स ऑस्ट्रेलिया से खेलने लगे थे। साल 1983 से 1985 के बीच उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के लिए 54 एकदिवसीय मैच खेले, जिसमें 36.25 की शानदार औसत से 1740 रन बनाए और अपनी मध्यम गति की गेंदबाजी से 18 विकेट भी लिए। प्रतिबंध हटने के बाद वे दक्षिण अफ्रीका लौटे और 1991 से 1994 तक दक्षिण अफ्रीका की ओर से 55 एकदिवसीय में कप्तानी करते हुए 32.54 की औसत से 1627 रन बनाये। दोनो देशों के लिए खेलेते हुए वेसल्स ने 3300 से अधिक रन बनाए और 39 कैच पकड़ जो उनके असाधारण कौशल

वेसल्स सहित इन क्रिकेटरों ने खेला है दो देशों से

मुम्बई (ईएमएस)। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में कुछ क्रिकेटर ऐसे हैं जिन्होंने अपने करियर में दो देशों की ओर से खेले हैं। इसके कई कारण भी रहे हैं जैसे अवसरों की तलाश, नागरिकता में बदलाव या जन्मभूमि में वापस लौटना। ये क्रिकेटर खासे सफल भी रहे हैं। इन्में दक्षिण अफ्रीका के पूर्व कप्तान भी शामिल हैं। वेसल्स सहित ये क्रिकेटर अपने प्रदर्शन से भी छाये रहे हैं। केप्टन वेसल्स : केप्टन वेसल्स की बात करें तो उन्होंने ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका दोनो ही ओर से खेला है। रंगभेद की नीति के कारण जब दक्षिण अफ्रीका पर अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंध लगा था। तब वेसल्स ऑस्ट्रेलिया से खेलने लगे थे। साल 1983 से 1985 के बीच उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के लिए 54 एकदिवसीय मैच खेले, जिसमें 36.25 की शानदार औसत से 1740 रन बनाए और अपनी मध्यम गति की गेंदबाजी से 18 विकेट भी लिए। प्रतिबंध हटने के बाद वे दक्षिण अफ्रीका लौटे और 1991 से 1994 तक दक्षिण अफ्रीका की ओर से 55 एकदिवसीय में कप्तानी करते हुए 32.54 की औसत से 1627 रन बनाये। दोनो देशों के लिए खेलेते हुए वेसल्स ने 3300 से अधिक रन बनाए और 39 कैच पकड़ जो उनके असाधारण कौशल



को दिखाता है। क्लेटन लैबर्ट : वेस्टइंडीज के आक्रामक सलामी बल्लेबाज क्लेटन लैबर्ट अपनी पावर-हिटिंग बल्लेबाजी के लिए जाने जाते थे। 1990 से 1998 तक उन्होंने वेस्टइंडीज के लिए 11 एकदिवसीय में 33.45 की औसत से 368 रन बनाए, जिसमें इंग्लैंड के खिलाफ एक यादगार शतकीय पारी 119 रन शामिल थी। वहीं अपने अंतरराष्ट्रीय करियर के अंत में वह अमेरिकी टीम से खेलने चले गये। साल 2004 में अमेरिका के लिए एक



एकदिवसीय मैच खेलकर 39 रन बनाए, जिससे उनका कुल अंतरराष्ट्रीय स्कोर 407 रन पर समाप्त हुआ। एंडरसन कमिंस: वेस्टइंडीज के पूर्व तेज गेंदबाज एंडरसन कमिंस वेस्टइंडीज ने 1991 से 1995 के बीच उन्होंने कैरिबियाई टीम के लिए 63 एकदिवसीय जिसमें इंग्लैंड के खिलाफ एक यादगार शतकीय पारी 119 रन शामिल थी। वहीं अपने अंतरराष्ट्रीय करियर के अंत में वह अमेरिकी टीम से खेलने चले गये। साल 2004 में अमेरिका के लिए एक



उन्होंने कनाडा की ओर से वापसी की। कनाडा के लिए 13 मुकाबलों में उन्होंने 48.53 की औसत से 13 विकेट और 32 रन बनाए। दोनों देशों को मिलाकर उनके नाम 91 एकदिवसीय विकेट दर्ज हैं। डेगी ब्राउन : इंग्लैंड के ऑलराउंडर डेगी ब्राउन ने अपने अंतरराष्ट्रीय करियर की शुरुआत राष्ट्रीय टीम से की थी। साल 1997 से 1998 के दौरान उन्होंने इंग्लैंड के लिए 9 एकदिवसीय मुकाबले खेले, जिसमें 24.75 की औसत से 99 रन

बनाने के साथ-साथ गेंदबाजी में 7 विकेट भी लिए। ब्राउन बाद में अपने जन्मस्थान स्कॉटलैंड से खेलने लगे। साल 2007 के दौरान उन्होंने स्कॉटलैंड के लिए 16 एकदिवसीय में 40.93 की औसत से 15 विकेट लेने के साथ ही 15.71 की औसत से 220 रन भी बनाये। इसमें एक अर्धशतक भी शामिल है। जैरेट जोस : जैरेट जोस इंग्लैंड की 2005 की ऐतिहासिक एशेज सीरीज जीत में अहम भूमिका निभाने वाले विकेटकीपर बल्लेबाज रहे हैं। साल 2004 से 2006 के बीच इंग्लैंड के लिए 49 एकदिवसीय मैचों में उन्होंने 24.69 की औसत से 815 रन बनाए और विकेट के पीछे 72 शिकार किये जिसमें 68 कैच और 4 स्टंपिंग शामिल हैं। इंग्लैंड टीम से बाहर होने के बाद वह अपनी जन्मभूमि पापुआ न्यू गिनी से खेलने लगे। उन्होंने पीपुअजी के लिए 2 एकदिवसीय मैच खेले, भले ही उनमें वे कोई रन नहीं बना सके, इन खिलाड़ियों के दो देशों से खेलने से साफ है कि क्रिकेट सिर्फ सीमाओं और राष्ट्रीयताओं तक सीमित नहीं, बल्कि खेल के प्रति अदम्य जुनून और अवसर की तलाश भी है। वेस्सल्स से लेकर जोन्स तक, इन पांचों दिग्गजों ने अपने-अपने तरीके से इस बात को साबित किया है।

धोनी नहीं नेहेरा हैं सबसे चतुर क्रिकेटर : मोइन

लंदन (ईएमएस)। इंग्लैंड के पूर्व ऑलराउंडर मोईन अली का मानना है कि गुजरात टाइटंस के कोच और पूर्व तेज गेंदबाज आशीष नेहरा सबसे चतुर क्रिकेटर है। मोइन के अनुसार नेहरा की खेल को लेकर समझ सबसे बेहतर है। वहीं आम तौर पर अब तक ये माना जाता रहा है कि

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी को खेल की सबसे बेहतर समझ है और वह हालातों का आंकलन करने में माहिर रहे हैं। इसी कारण उनकी कप्तानी में भारतीय टीम ने तीन आईसीसी ट्रॉफी जीतीं हैं। माना जाता है कि मैदान पर धोनी की हर चाल, हर फैसला विरोधियों से

दो कदम आगे का होता था। वहीं मोइन इससे सहमत नहीं दिखते मोइन के अनुसार नेहरा का क्रिकेटिंग दिमाग धोनी से भी तेज है। मोईन के अनुसार उन्होंने साल 2018 और 2019 के आईपीएल सत्र के दौरान रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) में नेहरा के साथ समय बिताया था और उसी

दौरान ही उन्हें नेहरा के क्रिकेट ज्ञान के बारे में पता चला। मोईन ने नेहरा के क्रिकेट दिमाग की जमकर तारीफ की। उन्होंने कहा, मेरा मानना है कि नेहरा के पास सबसे शानदार क्रिकेट ब्रेन है और वह खेल की लगभग हर स्थिति को समझते हैं। उनके पास हर स्थिति के लिए

कोई न कोई समाधान या थ्योरी हमेशा तैयार रहती है। यह दिखाता है कि नेहरा केवल तात्कालिक प्रतिक्रिया नहीं देते, बल्कि हालातों का आंकलन कर पहले से ही रणनीति बना लेते हैं। मोईन ने साथ ही कहा, उनकी हर बात के पीछे एक ठोस सोच होती है, जो या तो किसी डेटा पर

आधारित होती है या फिर किसी प्रमाण पर। जैसे कि यह पहले हो चुका है और तब यह हुआ था, इसलिए अब यह हो सकता है। यह पहलू नेहरा की वैज्ञानिक और तार्किक सोच को उजागर करता है, जहां वे केवल अनुभव पर नहीं, बल्कि सत्यापित तथ्यों पर भरोसा करते हैं।

गौरतलब है कि नेहरा वर्तमान में आईपीएल फ्रेंचाइजी गुजरात टाइटंस के मुख्य कोच हैं और उनके कोचिंग में गुजरात ने अपने डेब्यू सीजन में ही आईपीएल खिताब जीतकर सबको हैरान कर दिया था। इसी से उनकी रणनीतिक समझ और टीम प्रबंधन क्षमताओं का अंदाजा होता है।

मोईन ने कहा कि नेहरा की एक और खूबी ये है कि वह जानते हैं कि टीम का माहौल कैसे तैयार किया जाता है, खिलाड़ियों, लोगों और कोचों के साथ कैसे तालमेल बिठाया जाता है।यह गुण किसी भी सफल कोच के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, जो टीम को एकजुट और प्रेरित रखता है।